आर. एन. आई. रजि. नं. यू. पी. एच. आई. एन.-2000/1679 मूल्य 25/- रुपये एस. एस पी/एल. डब्लू/एन. पी-372/2017-19

हास्य व्यंग्य की अनूठी पत्रिका ISSN 2395-4957

अब अट्टहास इंटरनेट पर भी उपलब्ध www.writeconnectindia.com/ www.attahas.page

अट्टहास

हास्य-व्यंग्य

अट्टहास जुलाई 2025

लेखक का आत्मकथ्य

– सुभाष राय

सर्वश्री बेढब बनारसी, रामेदव धुरंधर, सुभाष राय, प्रेम जनमेजय, दीपक गिरकर, प्रभात गोस्वामी, मुकेश पोपली, गिरीश पंकज, अरुण अर्णव खरे, डॉ. पिलकेन्द्र अरोरा, प्रणय इलाहाबादी, अभिमन्यु जैन, डॉ. लोक सेतिया, रमाकन्त ताम्रकार, विवेक रंजन श्रीवास्तव, ऋषभदेव शर्मा, संजय वर्मा 'दृष्टि', राकेश अचल, शैलेन्द्र कपिल, सुधाकर आशावादी, अरविन्द तिवारी, पवन शर्मा, सी. पी. कवाफ़ी, ओमप्रकाश यती, अलंकार रस्तोगी, ब्रजेश कानूनगो, डॉ. निखिल आनंद गिरि, छत्र छाजेड़ "फक्कड़", डॉ. अजय जोशी, डॉ. संजीव कुमार चौधरी, शरद जोशी, विनय विक्रम सिंह मनकही, डॉ. रमा द्विवेदी, अर्चना त्यागी, आभा सिंह, संगीता गाँधी, रेखा शाह आरबी व रामकिशोर उपाध्याय आदि।

छँटे हुए रचनाकारों की छँटी हुई रचनाएं

अट्टहास सम्मान

से सम्मानित किये गये हास्य–व्यंग्य रचनाकारों की सूची

अट्टहास शिखर सम्मान

(2024) श्री सुरेश कांत (दिल्ली)
(2023) कथाकार बलराम
(2022) श्री प्रेम जनमेजय (दिल्ली)
(2022) श्री डी पी सिन्हा
(2018) श्रीमती सूर्यबाला लाल (मुम्बई)
(2017) श्री सुरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
(2016) श्री हरि जोशी (भोपाल)
(2015) श्री जैमिनी हरियाणवी (दिल्ली)
(2014) डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी (भोपाल)
(2013) डॉ. उर्मिल थपलियाल (लखनऊ)
(2012) श्री प्रदीप चौबे (ग्वालियर) म.प्र.
(2011) श्री मधुप पाण्डेय (नागपुर) महाराष्ट्र
(2010) श्री सुरेश उपाध्याय (होशिंगाबाद) म.प्र.
(2009) डॉ. शेरजंग गर्ग (दिल्ली)
(2008) श्री गोविन्द व्यास (दिल्ली)
(2007) श्री अल्हड़ बीकानेरी (दिल्ली)
(2006) श्री गोपाल चतुर्वेदी (लखनऊ)
(2005) पद्मश्री कन्हैयालाल नन्दन (दिल्ली)
(2004) श्री शंकर पुणतांबेकर (महाराष्ट्र)
(2003) श्री अशोक चक्रधर (दिल्ली)
(2002) श्री मुकुट बिहारी सरोज (ग्वालियर)
(2001) श्री लतीफ घोंघी (महासमुन्द)
(2000) श्री शैल चतुर्वेदी (मुम्बई)
(1999) पद्मश्री के. पी. सक्सेना (लखनऊ)
(1998) श्री माणिक वर्मा (भोपाल)
(1997) श्री हुल्लड़ मुरादाबादी (मुम्बई)
(1996) श्री रविन्द्रनाथ त्यागी (देहरादून)
(1995) श्री ओम प्रकाश 'आदित्य' (दिल्ली)
(1994) श्री नरेन्द्र कोहली (दिल्ली)
(1993) श्रीयुत् श्रीलाल शुक्ल (लखनऊ)
(1992) श्री गोपाल प्रसाद व्यास (दिल्ली)
(1991) श्री शरद जोशी (मुम्बई)
(1990) श्री मनोहरश्याम जोशी (दिल्ली)

अट्टहास युवा सम्मान

(2024) श्री अलंकार रस्तोगी (लखनऊ)
(2023) श्री सागर कुमार (रायपुर)
(2022) श्री अनुज खरे (भोपाल)
(2022) श्री पंकज प्रसून (लखनऊ)
(2018) डा. वागीश सारस्वत (मुम्बई)
(2017) श्री अशोक स्वतंत्र (दिल्ली)
(2016) श्री नीरज बधवार (दिल्ली)
(2015) श्री ललित लालित्य (दिल्ली)
(2014) श्री रमेश मुस्कान (आगरा)
(2013) श्री मुकुल महान (लखनऊ)
(2012) श्री अनुराग बाजपेयी (जयपुर)
(2011) श्री दीपक गुप्ता (दिल्ली)
(2010) श्री आलोक पुराणिक (दिल्ली)
(2009) श्री संजय झाला (जयपुर)
(2008) श्री सुभाष चन्दर (दिल्ली)
(2007) श्री तेज नारायण शर्मा 'बेचैन' (मुरैना)
(2006) श्री सरदार मनजीत सिंह (हरियाणा)
(2005) डॉ. सुनील जोगी (दिल्ली)
(2004) श्री प्रवीण शुक्ल (दिल्ली)
(2003) श्री गिरीश पंकज (रायपुर)
(2002) डॉ. सुरेन्द्र दुबे (रायपुर)
(2001) श्री ईश्वर शर्मा (महासमुन्द)
(2000) श्री शंभू सिंह मनहर (मुरैना)
(1999) श्री नीरज पुरी (बैतूल)
(1998) डॉ. सुरेश अवस्थी (कानपुर)
(1997) श्री विनोद साव (दुर्ग)
(1996) डॉ. सूर्य कुमार पाण्डेय (लखनऊ)
(1995) डॉ. हरीश नवल (दिल्ली)
(1994) श्री सुरेन्द्र दुबे (जयपुर)
(1993) श्री सुरेश नीरव (दिल्ली)
(1992) डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी (भोपाल)
(1991) श्री प्रेम जनमेजय (दिल्ली)
(1990) श्री प्रदीप चौबे (ग्वालियर)

वर्ष: 26/2025, अंक–3, जुलाई 2025

R.N.I.Reg. No.U P H I N- 2000/1679
ISSN NO- 2395-4957
मूल्य 25/-

अट्टहास®

हास्य व्यंग्य

हास्य तरंगों से रंगे, जन जीवन के अंग।
जुड़िये मन से आप भी, अट्टहास के संग

संस्थापक प्रधान संपादक — स्व. अनूप श्रीवास्तव
प्रधान संपादक — रामकिशोर उपाध्याय
संपादक — शिल्पा श्रीवास्तव
संपादकीय प्रभारी — डा. आभा सिंह

संपादकीय
अभिषेक, पवन गौतम, देवांशी, अविका

संयोजन — जितेन्द्र कुमार
रेखाकंन — जितेन्द्र कुमार
वित्तीय सलाहकार — अरुण कुमार

संपादकीय कार्यालय
सी.पी. 5, पत्रकार कालोनी, सेक्टर–सी,
अलीगंज, लखनऊ–226024
ईमेल : anupsrilko@gmail.com
मोबाइल नंबर : 09335276946

दिल्ली कार्यालयः
फ्लैट नं. 10, इंद्रप्रस्थ अपार्टमेंट्स, पॉकेट 3,
सेक्टर–12, द्वारका, नई दिल्ली–110078
(निकट मीडियोर हॉस्पिटल)
मोबाइल : 03354174664

ब्यूरो प्रमुख

मध्यप्रदेश
अरुण अर्णव खरे
डी 1/35 दानिश नगर,
होशंगाबाद रोड, भोपाल–462026
मो.– 09893007744

नागपुर ब्यूरो
डा. आभा सिंह
प्लाट नम्बर 26, वेणु भवन सोसाइटी
के पास, फ्रेंड्स कॉलोनी, कटोल रोड,
नागपुर–440013

अनुक्रम

स्थायी स्तम्भ

संपादकीय–हिंदी व्यंग्य में आधुनिक विषयों को अपनाने की आवश्यकता –रामकिशोर उपाध्याय–4, **अट्टहास टाइम्स**–अनूप स्मृति अंक : अनूप श्रीवास्तव के व्यक्तित्व और डुतित्व के महत्वपूर्ण पक्षों को उकेरता एक संग्रहणीय अंक –42, आपकी चिट्ठी मिली–46

विरासत

चिकित्सा का चक्कर–बेढब बनारसी–5

व्यंग्य विमर्श

खूब सोच समझकर व्यंग्य लिख रहे लेखक भी नए प्रयोग नहीं करते–अरविंद तिवारी–10

व्यंग्य

देवताओं का अनाथालय–रामेदव धुरंधर–11, लेखक का आत्मकथ्य–सुभाष राय–13 , समरथ का घोटाला नहीं दोष गोसाई–प्रेम जनमेजय–15, राजा विक्रमादित्य, सेंसर बोर्ड और सेंसर बोर्ड की कैंची–दीपक गिरकर–17, आदमी का बाज़ारीकरण–प्रभात गोस्वामी–19, एक देश एक विवाह एक नृत्य–मुकेश पोपली–20, कहानी एक कहानीकार के अभिनंदन ग्रंथ की–डा. पिलकेन्द्र अरोरा–22, समाज सेवी–अभिमन्यु जैन–24, गधे जी से सीखिये–रमाकन्त ताम्रकार–25, न्यूज–संगीता गाँधी–27, मार्डन युग की चौपाल पर–रायचंदो की पंचायती–रेखा शाह आरबी–28, हर्र लगे न फिटकरी, रंग चोखा आए–विवेक रंजन श्रीवास्तव–30, लोग वाकई ना समझ है–संजय वर्मा "दृष्टि"–3, इनामची–डॉ संजीव कुमार चौधरी–33, आप चौंक जायेंगे!–डॉ. अजय जोशी–35, खामखाँ अंकल.!–गिरीश पंकज–36, जनता सब जानती है–छत्र छाजेड़ "फक्कड़"–38, व्यंग्य लेखन के खतरे–ब्रजेश कानूनगो–40, एक रंग की हो चली सारी टोपियाँ–अरुण अर्णव खरे –41, एस 800–विनय विक्रम सिंह मनकही–44, अरमानों की वेटलिफ्टिंग–अलंकार रस्तोगी–48, युग में युग : अंधायुग–आभा सिंह–49, कब होगी पूरी, इक हसरत अधूरी–डॉ लोक सेतिया–51

कविताएं

ग़ज़ल–ओमप्रकाश यती–16, एक मामूली–सी बात–प्रणय इलाहाबादी–21, अकड़, अक्ल और पकड़ में संवाद–शैलेन्द्र कपिल–23, तेवरी–ऋषभदेव शर्मा–26, ग़ज़ल–राकेश अचल–29, हास्य कविता–सुधाकर आशावादी–32, चिड़िया–शरद जोशी–34, कचरा–डॉ. निखिल आनंद गिरि–37, कुछ करना था–सी. पी. कवाफ़ी–45

नवपल्लव

आधुनिक विवाह मंडप/सामाजिक कार्यकर्ता/नेटवर्क देवता–पवन शर्मा–52, शिक्षा–शिरोमणि–डॉ रमा द्विवेदी–53, वोट गणित–अर्चना त्यागी–54

'अट्टहास' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादस्पद मामले लखनऊ न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन और संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक शिल्पा श्रीवास्तव द्वारा प्रिन्ट आर्ट कैन्ट रोड, लखनऊ से मुद्रित तथा 9/10 गुलिस्ता कॉलोनी, लखनऊ – 226024 उ0प्र0 से प्रकाशित।

संपादकीय

रामकिशोर उपाध्याय
प्रधान संपादक

हिंदी व्यंग्य में आधुनिक विषयों को अपनाने की आवश्यकता

हिंदी सहित सभी भाषाओं में व्यंग्य विधा का निरंतर विकास हो रहा है, किन्तु अभी प्रयासों के बावजूद व्यंग्य को अपेक्षित सम्मान नहीं मिल रहा है। यह निश्चित ही व्यंग्य लेखकों के लिए चिंता का विषय है। यदि हम वर्तमान अंग्रेजी साहित्य की बात करें तो वहां पर्यावरण, जलवायु–परिवर्तन, आर्थिक और सामाजिक असमानता और सामाजिक न्याय जैसे आधुनिक विषयों पर काफी व्यंग्य लेखन हो रहा है। ऐसा नहीं है कि भारत में ये समस्याएं नहीं हैं बल्कि कहीं–कहीं इनकी स्थितियाँ पश्चिम देशों से भी अधिक विकट है। भारत एक विकासशील देश है और यहाँ विकास की अकूत संभावनाएँ है। विकास के नाम पर पहाड़ खोदे जा रहे हैं, खनन हेतु जंगल के जंगल बड़ी बेरहमी से साफ कर दिए जा रहें हैं और सड़कों के निर्माण /विस्तार के लिए किनारे खड़े छायादार पेड़ों की अंधाधुंध कटाई जारी है। नदियों में अवैध खनन की घटनाओं से समाचार–पत्र पटे पड़े हैं। खाद्य–पदार्थों में मिलावट और नकली दवाओं के अवैध व्यापार से लेकर अच्छे इलाज के नाम पर प्राइवेट अस्पताल की लूट से आमजन परेशान है। उक्त सभी विषय केवल किसी पर्यावरणविद, राजनेता, अर्थशास्त्री अथवा एक्टिविस्ट की चिंता के विषय नहीं है बल्कि हर संवेदनशील साहित्यकार विशेषकर व्यंग्य लेखक की विशेष चिंता का कारण होना चाहिए, क्योंकि व्यंग्य–लेखक ही समाज में आमजन केन्द्रित विमर्श की दिशा को आकार देने के साथ –साथ सांस्कृतिक सन्देश गढ़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। दुर्भाग्य से आज के हिंदी व्यंग्य लेखन में नारी, निर्बल वर्ग, विपक्ष और व्यक्ति या घटनापरक जैसे विषयों पर व्यंग्य लेखन अधिक देखने को मिल रहा है। यह हिंदी व्यंग्य के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती भी है और उसकी परीक्षा भी कि वह समकाल की इस चुनौतियों से कैसे निपटता है। हिंदी व्यंग्य के स्थायी महत्व के लिए यह आवश्यक है कि लेखन में आधुनिक विषयों शामिल कर हास्य, उपहास, छद्म आलोचना के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक मानदंडों तथा परम्पराओं को अनावृत कर विश्व में हो रही घटनाओं के प्रति पाठक की आलोचनात्मक सोच को चुनौती देता रहे। विश्व की समस्त भाषाओँ में व्यंग्य लेखन कमोबेश यही कार्य कर भी रहा है। तभी ख्यात अंग्रेजी व्यंग्य लेखक जोनाथन स्विफ्ट का यह कहना– व्यंग्य वह दर्पण है जिसमें दर्शक सामान्यतः स्वयं को छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे की पड़ताल करता है, बिलकुल सही है।

अभी जून के अंतिम सप्ताह में बनारस में सम्पन्न हुए दो दिवसीय 'राजेन्द्र प्रसाद स्मृति सर्जना शिखर सम्मान समारोह' में ख्यात व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय ने व्यंग्य लेखन के विषय में अपनी चिता को व्यक्त करते हुए एक–दो बातों का विशेष रूप से उल्लेख किया। एक–व्यंग्य का आलोचना शास्त्र नहीं है, दूसरा–व्यंग्य शोध में विश्लेषण नहीं होता। उनकी चिताएं जायज है और व्यंग्य–चिंतकों, शोध–मार्गदर्शकों और शोधार्थियों को इस दिशा में गंभीरता से कार्य करना चाहिए। उनकी बात से सहमति व्यक्त करते हुए मैं यह कहना चाहता हूँ कि जैसे अंगेजी भाषा में व्यंग्य को–होरेशियन सटायर, जूवेनेलियन सटायर और मेनिपियन सटायर नामक तीन शैलियों में उनकी प्रकृति के अनुसार विभाजित कर दिया गया है, तदनुसार क्यों न हिंदी व्यंग्य की शैलियाँ निर्धारित कर दी जाए (यदि अभी तक नहीं हुआ हो तो) ताकि शोध के माध्यम से व्यंग्य–लेखकों का सम्यक मूल्यांकन हो सके। हालाँकि किसी अन्य भाषा का हम अनुकरण करें, यह नितांत आवश्यक नहीं है, किन्तु समकाल में विभिन्न भाषाओं में हो रहे लेखन की अनदेखी करना हिंदी साहित्य के विकास–विमर्श के लिए उचित भी नहीं माना जा सकता है।

अंत में, व्यंग्य लेखन स्पष्टता, समय–निर्धारण का कौशल और उचित शैली के चयन पर ही आश्रित है इससे जहाँ केवल व्याकरणीय ज्ञान और शैली ही आकर्षित ही नहीं करेगी वहीं लेखक के कहन/लहजे की नापतौल भी होगी कि उसका वाक्चातुर्य (विट) लक्षित सन्देश पर निशाना लगाने से कहीं चूक तो नहीं रहा।

आशा है आपको यह जुलाई अंक पसंद आयेगा। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।